संपादकीय

यह सुखद है कि हंस शोध सुधा पत्रिका को हमने जिस उद्देश्य के लिए आरंभ किया था उसके करीब पहुंच चुके हैं। पत्रिका के टीम में मेहनत से काम करते हुए ई–आईएसएसएन भी ले लिया। आईएसएसएन मिलने के कारण पत्रिका के प्रति हमारी जिम्मेदारी और बढ़ गई है। हमारी कोशिश रहेगी कि पत्रिका का समय से प्रकाशन हो, उसकी सामग्री की गुणवत्ता और मौलिकता का विशेष ध्यान रखा जाए।

पिछले कुछ वर्षो में शोध की जो उपयोगिता बढ़ी है। वह अनायास नहीं बल्कि शिक्षण की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए सार्थक प्रयास है। यह कहने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए कि पिछले कुछ हम शोध की मूल प्रविधि भूल गए थे। कुछ संदर्भ को इकट्ठा कर कुछ लिख देने को हमने शोध मान लिया था जिससे कोई मौलिक शोध सामने नहीं आ रहा था। यूजीसी द्वारा बने नए नियम में शोध की महत्ता पर विशेष बल दिया गया हैं। आज जिस शोध की चर्चा पूरे शिक्षण जगत में हो रही है उससे युवा पीढ़ी को बहुत कुछ नया सीखने को मिलेगा। उन्हें यह समझ आएगा कि शोध करना या शोध पत्र लिखना जिम्मेदारी का कार्य है। इससे न केवल शोध के प्रति लोगों की मानसिकता बदलेगी बल्कि उपयोगी लेखों और पुस्तकों को सामने लाने में मदद मिलेगी।

सूचना क्रांति के इस युग में ई–पत्रिकाओं का प्रभाव तेजी से अकादमिक जगत पर पड़ा है। आज अकादमिक दुनिया इस बात को मानने के लिए तैयार है कि पत्रिकाओं में छपे लेख किसी भी बहस या विमर्श को नया रूप दे सकते हैं।

हंस शोध सुधा अब नई जिम्मेदारी और नए कलेवर में आपके सामने हैं। इसमें प्रकाशित लेखों को हमारी समिति द्वारा बकायदा चेक किया गया है। उनसे अनुमति लेकर ही लेखों का प्रकाशन हुआ है। हंस शोध सुधा टीम की पूरी कोशिश है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री अपने शीर्षक की सार्थकता को सिद्ध करने में सक्षम हो और उसमें दिए गए संदर्भ और सामग्री मौलिक हो। इसीलिए हमें लेखों के प्लेगरिज्म पर भी विशेष ध्यान देना होगा।

मुझे विश्वास है कि हंस शोध सुधा की समीक्षा समिति और संपादकीय टीम मिलकर इसे देश की प्रतिष्ठित और प्रमाणिक पत्रिका बनाएगी। हिंदी और अंग्रेजी दोनों हंस शोध सुधा का प्रकाशन होता है। भाषाओं में साहित्य, कला, विज्ञान और अर्थ से जुड़े विषयों के विशेषज्ञ हमारे पास हैं।

मेरी शुभकामनाएं।

प्रोफ रमा
प्राचार्या
हंसराज महाविद्यालय